

न्यायालय उपखण्ड अधिकारी तालेड़ा जिला (बूंदी)

पीठासीन अधिकारी हरबिन्दर डी सिंह (R.A.S.)

मिसल नं०

तारीख दायर

तारीख फैसला

11/दावा/2012(2012/00001)

06.01.2012

18.03.2024

जगदीश प्रसाद माहेश्वरी आयु 47 साल आत्मज श्रीनाथ जाति महाजन निवासी ग्राम देहित तहसील बूंदी हाल निवासी म.नं. 5 दशहरा मैदान स्कीम, शक्तिनगर, कोटा (राज.)

.....वादी

बनाम

1. श्रीनाथ आयु 78 साल आत्मज रामकिशन जाति महाजन निवासी ग्राम देहित तहसील बूंदी हाल निवासी दशहरा मैदान स्कीम म.नं. 5 शक्तिनगर, कोटा(राज०)
2. श्रीमति ललिता बाई आयु 65 साल पुत्री श्री रामकिशन जी पत्नि श्री बृजमोहन जी झंवर जाति महाजन निवासी 1 सी 51 महावीर नगर विस्तार योजना सेक्टर -1 कोटा(राज०)
3. राजस्थान राज्य जय तहसीलदार तालेड़ा जिला बूंदी (राज०)
4. उपपंजीयक, उपपंजीयन कार्यालय तालेड़ा जिला बूंदी (राज०)

...प्रतिवादीगण

उपस्थित अभिभाषक

अधिवक्तावादीगण:- श्री राजकुमार गौतम

अधिवक्ता प्रतिवादीगण:-

- : : निर्णय : : -

इस न्यायालय में वाद अन्तर्गत धारा 88,89,188 आर.टी.एक्ट के तहत वादी द्वारा पेश किया है। वाद पत्र के संक्षिप्त में तथ्य इस प्रकार है कि कृषि भूमि खसरा संख्या 2160 रकबा 10 बीघा 14 बिस्वा ग्राम देहित तहसील तालेड़ा जिला बूंदी में स्थित है जो पूर्व में रामकिशन वन्द गोविन्दलाल जाति महाजन निवासी देहित के खाते दर्ज थी। रामकिशन जी का दिनांक 17.5.1990 को देहान्त हो गया है। प्रतिवादी कम 1 व 2 रामकिशन जी के पुत्र व पुत्री है। रामकिशन जी की पत्नि का पहले ही देहान्त हो गया है। विवादित आराजी स्वर्गीय श्री रामकिशन आ० गोविन्दलाल जी की स्वअर्जित भूमि है जिसे रामकिशन जी द्वारा राज्य सरकार से आवंटित करवायी थी। रामकिशन जी के एक पुत्र श्रीनाथ एवं दो पुत्रियाँ ललिता एवं स्वर्गीय श्रीमति गीता थी। तीनों सन्तानों के विवाह उपरान्त रामकिशन जी की पुत्री गीता का देहान्त हो गया है। रामकिशन जी के पुत्र श्रीनाथ जी जिला गुना मध्यप्रदेश में अध्यापक का कार्य करते थे एवं पुत्री ललिता ससुराल में थी रामकिशन जी की वृद्धावस्था में रामकिशन जी वादी के पास ही रहते थे एवं बिमारी में देखभाल करता था, सेवासुत्रा करता था, जमीन पर काश्तकारी की व्यवस्था करता था और रामकिशन जी के साथ दुकान पर बैठकर व्यवसाय करता था। रामकिशन जी अपने पौत्र जगदीश की सेवा सुत्रा से प्रसन्न होकर विवादीत आराजी, सती चबुतरा कोटा स्थित दुकान एवं ग्राम देहित स्थित मकान सहित सम्पूर्ण चल अचल सम्पत्ति की वसीयत दिनांक 29.6.1988 को गवाहन के सम्मक्ष निष्पादित करके अपने हस्ताक्षर कर दिये और इस वसीयत को नोटरी पब्लिक से तस्दीक करवा दिया जिसके आधार पर रामकिशन जी की सम्पूर्ण चल अचल सम्पत्ति पर रामकिशन जी की मृत्यु उपरान्त वादी का वैधानिक अधिकार है। रामकिशन जी के जीवनकाल से अभी तक निरन्तर वाद विषयक कृषि भूमि पर स्वतन्त्र रूप से अकेला काबिज काश्त चला आ रहा है। प्रतिवादी कम 1 व 2 ने राजस्व कर्मचारियों से मिलकर वादी को सूचना दिये बिना एवं सुनवाई का अवसर दिये बिना वाद विषयक कृषि भूमि को नामान्तरण द्वारा अपने खाते अंकित करवा लिया है, जबकि वसीयत दिनांक 29.6.1988 के अनुसार वाद विषयक कृषि भूमि का एक मात्र खातेदार वादी है। वादी को अधिकार प्राप्त है कि अपने खातेदारी अधिकार की घोषणा करवाकर राजस्व अभिलेख में दर्ज करवाये तथा प्रतिवादीगण के विरुद्ध स्थायी निषेधाज्ञा प्राप्त करे कि वे वादग्रस्त भूमि को रहन बेचान एवं भारग्रस्त नहीं करे तथा वादी के कब्जे काश्त में हस्तक्षेप नहीं करे। दिनांक 13.12.2011 को प्रतिवादी ललिता ने वादी को कहा कि वह खाते में नाम होने के आधार पर जमीन को रहन बेचान अथवा भारग्रस्त कर देगी और कब्जा कर लेगी। ललिता बाई द्वारा ऐसा किया जाता है तो वादी को मारी अपूर्णाय क्षति होगी। अतः विवादीत आराजी खण्ड 2012 2160 रकबा 10 बीघा 14 बिस्वा बाके ग्राम देहित को वादी के खातेदारी की घोषणा की जाकर राजस्व अभिलेख में वादी का नाम खातेदार के स्थान पर अंकित किया जावे तथा प्रतिवादी सं० 1 व 2 का नाम विलोपित किया जावे। प्रतिवादीगण को स्थायी निषेधाज्ञा से पाबन्द किया जावे कि वे वादग्रस्त भूमि को रहन बेचान अथवा भारग्रस्त नहीं करे ना ही कब्जे काश्त में हस्तक्षेप करे।

वाद पत्र दर्ज रजिस्टर कर प्रतिवादीगण को जरिये सम्मन तलब किया गया।

वाद पत्र के सन्दर्भ में प्रतिवादी सं० 1 की ओर से जवाब दावा दिनांक 14.03.2012 को पेश कर वाद पत्र की घरण सं. 1 लगायत 4 स्वीकार की गई, वाद पत्र की घरण सं० 5 व 6 कानूनी होना अंकित किया गया। प्रतिवादी सं० 1 द्वारा वाद पत्र की प्रार्थना स्वीकार कर वाद पत्र को डिक्ली किये जाने में सहमति अंकित की गई। प्रतिवादी सं० 2 द्वारा दिनांक 29.01.2014 को जवाब दावा पेश कर निवेदन किया कि वाद पत्र की घरण सं० 1 स्वीकार है। वाद पत्र की घरण सं० 2 में वर्णित भूमि स्वर्गीय रामकिशन जी की स्वअर्जित होना अस्वीकार है। विवादित आराजी पैतृक भूमि है। पुत्रियों का विवाह होना स्वीकार है। वादी द्वारा श्री रामकिशन जी प्रतिवादी सं० 2 के पिता की सेवा बंदगी करना असत्य होने से अस्वीकार है। प्रतिवादी सं० 1 तो बाहर रहते थे। जो कोटा में कम आते थे। पिताजी की सेवा बंदगी प्रतिवादी सं० 2 ही करती थी। श्री रामकिशन जी के द्वारा वादी के पक्ष में

6/18/24

कटना अस्वीकार है। वैसे वादी व प्रतिवादी सं० 1 पिता पुत्र है जो संयुक्त रूप से एक ही मकान में वास कर रहे हैं। जिन्होंने मिलीभगत कर कोई पिताजी की फर्जी वसीयत प्रतिवादिनी को भूमि से व सम्पत्ति से वंचित करने के उद्देश्य से बना ली हो ओर उस पर प्रतिवादिनी के पिता को फर्जी हस्ताक्षर कर दिये हो तो वह वसीयत फर्जी है इसी कारण वादी ने उक्त वसीयत के आधार पर भूमि का इन्तकाल नहीं खुलवाया। श्री रामकिशन जी अपने स्वर्गवास के दो ढाई वर्ष पूर्व से ही काफी बीमार रहते थे। उन्हें देखने, समझने, सोचने की शक्तिहीन हो चुकी थी। उस असहाय अवस्था में वादी व प्रतिवादी सं० 1 ने मिलीभगत कर कपटपूर्वक श्री रामकिशन जी से कोई वसीयत करवा ली हो तो वह शून्य प्रभावी है। वाद प्रस्तुती से पूर्व सन् 2011 के मध्य तक वादी के पिता प्रतिवादी नं० 1 व 2 उक्त भूमि को संयुक्त रूप से काश्त करवाते थे और फसल की राशि प्रतिवादी नं० 1 वादी के सामने ही प्रतिवादी नं० 2 को देता था। यह कम श्री रामकिशन जी के स्वर्गवास के पश्चात उक्त समय तक चलता रहा। लेकिन वर्ष 2011 के मध्य के बाद वादी व प्रतिवादी नं० 1 के मन में प्रतिवादी सं० 2 को जमीन से वंचित करने का भारी लोभ एवं बदनियती आ गई और उन्होंने प्रतिवादी सं० 2 को फसल मुनाफा का हिस्सा देना बन्द कर दिया और वाद प्रस्तुत किया गया। उक्त भूमि में प्रतिवादी सं० 1 व 2 संयुक्त रूप से 1/2 -1/2 हिस्से के सह खातेदार है। प्रतिवादिनी भूमि का विधिवत रूप से बटवारा करवाकर अपने हिस्से में आने वाली भूमि को अपने खाते में अनन्य रूप से अंकित करवाने एवं अपने हिस्से में आने वाली भूमि को अपने कब्जे में लेने की अधिकारी है। वाद पत्र की चरण सं० 3 अस्वीकार करते हुए अंकित किया कि नामान्तरण वादी की मौजूदगी में व उसके ज्ञान में तस्दीक किया गया है। ओर स्वयं वादी ने ही प्रतिवादी नं० 1 व 2 के पक्ष में खुलवाया है नामान्तरण के समय तक तथाकथित वसीयत अस्तित्व में ही नहीं थी। अन्यथा वादी उक्त वसीयत के आधार पर अपने नाम नामान्तरण अवश्य खुलवाता। वाद पत्र की चरण सं० 4 व 5 को अस्वीकार किया गया एवं वाद पत्र की चरण सं० 6 तकमीली होना अंकित किया। वाद पत्र का प्रत्युत्तर के साथ ही प्रतिवादी सं० 2 द्वारा काउन्टर क्लेम पेश किया जिसके अनुसार विवादित कृषि भूमि खणसं० 2160 रकबा 10 बीघा 14 बिस्वा वाके ग्राम देहित तहसील तालेडा के प्रतिवादी नं० 1 व प्रतिवादी सं० 2 सह खातेदार है और इसी हेतियत से उक्त भूमि को वादी की ज्ञान में प्रतिवादी सं० 1 व 2 संयुक्त रूप से काश्त करते रहे और सन् 2011 के मध्य तक श्री रामकिशन जी के स्वर्गवास के पश्चात से ही प्रतिवादी सं० 1 व प्रतिवादी सं० 2 को उक्त भूमि के 1/2 हिस्से का मुनाफा देता रहा। अब प्रतिवादी सं० 1 व वादी के मन में उक्त भूमि को हड़पने का लोभ आ गया है और उक्त भूमि का मुनाफा सन् 2011 के मध्य से देना बंद कर दिया और वाद प्रस्तुत कर दिया। प्रतिवादी सं० 2 को उक्त भूमि का बटवारा करवाकर अपने हिस्से में आने वाली भूमि को अनन्य रूप से अपने खाते में अंकित करवाने का ओर उस भूमि पर काबिज होने का अधिकार प्राप्त है। अतः प्रतिवादी सं० 2 का काउन्टर क्लेम स्वीकार किया जाकर उक्त भूमि का बटवारा किया जाकर 1/2 हिस्सा भूमि प्रतिवादी सं० 2 के अनन्य रूप से खाते अंकित की जावे और उस हिस्से पर वादी को काबिज करवाया जावे।

प्रतिवादी सं० 3 व 4 की ओर से पेटोकार सरकार द्वारा जवाब प्रस्तुत कर वाद पत्र की चरण सं० 1 को स्वीकार किया गया वाद पत्र की चरण सं० 2 लगायत 4 को अस्वीकार किया गया वाद पत्र की चरण सं० 5 व 6 कानूनी होना अंकित करते हुए अंकित किया कि यदि कोई नामान्तरण हुआ है तो उस नामान्तरण की अपील सक्षम न्यायालय में करनी चाहिए थी।

प्रतिवादी सं० 2 की ओर से प्रस्तुत काउन्टर क्लेम का वादी ने जवाब प्रस्तुत कर अंकित किया कि कृषि भूमि खणसं० 2160 रकबा 10 बीघा 14 बिस्वा स्वर्गीय श्री रामकिशन आठ श्री गोविन्दलाल महाजन नि० देहित ने राज्य सरकार से निलामी बोली में खरीदकर पट्टा प्राप्त किया था। दिनांक 1.3.45 को डिट्टी कमिश्नर पाटन राज बूंदी द्वारा एक पट्टा स्व० रामकिशन के नाम मिसल सं० 437 इन्तजामी तारीख 2.2.44 में यह पट्टा जारी किया गया था। तत्समय वाद विषयक भूमि का खसरा सं० 963 रकबा 8 बीघा 3 बिस्वा एवं खणसं० 1021 रकबा 3 बीघा 2 बिस्वा कुल 11 बीघा 5 बिस्वा था। इस प्रकार उक्त भूमि रामकिशन जी की स्वअर्जित सम्पत्ति थी। जिसे उन्होंने वसीयतनामा दिनांक 29.6.88 द्वारा वादी जगदीश प्रसाद को वसीयत कर दिया था। रामकिशन जी के स्वर्गवास के पश्चात इस कृषि भूमि पर वादी बहैसियत वैधानिक खातेदार निरन्तर काबिज काश्त चला आ रहा है। फोती नामान्तरण के आधार पर प्रतिवादी सं० 1 व 2 का नाम जमाबन्दी में खातेदार के स्थान पर दर्ज कर दिया गया जो अवैध है और उसके आधार पर प्रतिवादी सं० 1 व 2 को वाद विषयक कृषि भूमि में कोई वैधानिक स्वत्व प्राप्त नहीं होता है। नामान्तरण की कार्यवाही फिसकल नेचर की है, जिसके आधार पर किसी अधिकार का निर्णय नहीं किया जा सकता है। प्रतिवादी सं० 1 द्वारा प्रतिवादी सं० 2 को भूमि का मुनाफा देने का तथ्य भी असत्य होने से अस्वीकार है वाद भूमि पर एकमात्र वादी काबिज काश्त चला आ रहा है। काउन्टर क्लेम की चरण सं० 2 अस्वीकार है। काउन्टर क्लेम की चरण सं० 3 में वर्णित तथ्य अस्वीकार है। प्रतिवादी सं० 2 वैधानिक खातेदार नहीं होने से बटवारा करवाने की अधिकारी नहीं है। काउन्टर क्लेम स्वीकार नहीं है।

उक्तानुसार जवाब प्राप्त हो जाने के उपरान्त पत्रावली में निम्न तनकीयात कायम की गई-

1. आया वादी विवादित आराजी के राजस्व रिकार्ड में बतौर खातेदार स्वयं का नाम अंकन करवाने एवं प्रतिवादी सं० 1 व 2 का नाम विलोपित करवाने का अधिकारी है। वादी
2. आया वादी विवादित आराजी के सम्बन्ध में प्रतिवादीगण को स्थायी निबेधाज्ञा से पाबन्द करवाने का अधिकारी वादी है। वादी
3. आया प्रति० सं० 2 विवादित आराजी का बटवारा करवाकर 1/2 हिस्से की आराजी को स्वयं के नाम खाते दर्ज करवाने का अधिकारी है। प्रतिवादी सं० 2
4. अनुतोष।

वादी की ओर से नकल जमाबन्दी खाता सं० 566 संवत् 2064-67 वाके ग्राम देहित प्रदर्श-1, नकल जमाबन्दी खाता सं० 350 संवत् 2048-57 वाके ग्राम देहित प्रदर्श-2, पट्टा मिसल सं० 437 दिनांक 02.02.1944 प्रदर्श-3, मृत्यु प्रमाण पत्र रामकिशन आठ गोविन्दलाल प्रदर्श-4, वसीयत नामा रामकिशन आठ गोविन्दलाल प्रदर्श-5, मिलान क्षेत्रफल संवत् 2028 से 46 वाके ग्राम देहित प्रदर्श-6, अलोटेमन्ड सूची ग्राम देहित प्रदर्श-7 प्रस्तुत की गई तथा वादी द्वारा स्वयं के PW-1 एवं गवाह सत्यप्रकाश शारदा PW-2, नरेश राजोरा PW-3 के बयान करवाये गये।

बहस वकील वादी एवं पेटोकार सुनी गई।

वादी वकील द्वारा दौरान बहस ध्वस्त किया गया कि घोषणा के बाद की कोई समय सीमा तय नहीं है घोषणा का बाद कभी भी लाया जा सकता है। जहां तक नामा० का सवाल है वह फिस्कल एन्टी है। वादी के हक में जो नोटरी दस्तावेज है वह कोन्सिल नहीं हो तब तक अधिकार सारिज नहीं हो सकता है एवं वादी के दादा रामकिशन जी द्वारा वादी की सेवा सुत्रा से खुश होकर उसके पक्ष में अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति को जर्ज वसीयत उसे दी है ऐसी स्थिति में उक्त वादगस्त भूमि जिस पर प्रतिवादी सं० 1 व 2 द्वारा अवैध रूप से नामान्तरण दर्ज करवाकर भूमि अपने नाम करवा ली गई है। जिस पर से प्रतिवादी सं० 1 व 2 का नाम विलोपित किया जाकर वादी के पक्ष में घोषणा की जावे।

पेटोकार सरकार ने दौरान बहस अपने जवाब को दोहराते हुए कहा कि यदि कोई नामान्तरण हुआ है तो उस नामान्तरण की अपील सक्षम न्यायालय में करनी चाहिए थी। अतः वादी का वाद चलने योग्य नहीं है।

1. आया वादी विवादित आराजी के राजस्व रिकार्ड में बतौर खातेदार स्वयं का नाम अंकन करवाने एवं प्रतिवादी सं० 1 व 2 का नाम विलोपित करवाने का अधिकारी है।

इस तनकी को साबित करने का भार वादी पर था। वादी द्वारा प्रस्तुत नकल जमाबन्दी खाता सं० 566 संवत् 2064-67 वाके ग्राम देहित प्रदर्श-1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उक्त आराजी के खातेदार श्रीनाथ वल्द रामकिशन व मु० ललीता पुत्री रामकिशन कोम महाजन अंकित है। प्रस्तुत जमाबन्दी खाता सं० 350 संवत् 2048-57 प्रदर्श-2 में श्री रामकिशन वल्द गोविन्दलाल कोम महाजन के स्थान पर जर्ज नामान्तरण सं० 808 से से श्रीनाथ वल्द रामकिशन व ललीलाबाई पुत्री रामकिशन का नाम दर्ज होना स्पष्ट है। साक्ष्य के रूप में प्रदर्श-3 पट्टा डिप्टी कमि० पाटन मिसल सं० 437 दिनांक 2.2.1944 पेश किया। वादी द्वारा श्री रामकिशन आ० गोविन्दलाल की मृत्यु का प्रमाण मृत्यु प्रमाण पत्र दिनांक 12.7.1990 प्रदर्श-4 प्रस्तुत किया। जहां तक वादी का प्रश्न है तो उनके द्वारा वसीयत नामा दिनांक 29.06.1988 प्रदर्श-5 के आधार पर यह वाद न्यायालय में प्रस्तुत किया है। वादी द्वारा मिलान क्षेत्रफल संवत् 2028 से 46 वाके ग्राम देहित प्रदर्श-6 व अलोटेमेंट सूची ग्राम देहित प्रदर्श-7 पेश किया जिससे यह प्रमाणित होता है कि उक्त भूमि वर्तमान खतरा सं० 2160 रकबा 10 बीघा 14 बिस्वा रामकिशन वल्द गोविन्दलाल महाजन को आवंटित हुई थी जिसके तत्समय ख० सं० 1339/2 रकबा 8.03 बीघा एवं ख० सं० 1394 रकबा 3.02 बीघा कुल 11 बीघा 10 बिस्वा थे। जिनका वर्तमान ख० नं० 2160 रकबा 10 बीघा 14 बिस्वा बना। वादी द्वारा प्रस्तुत वसीयत नामा प्रदर्श-5 एवं बयान स्वयं वादी PW-1 एवं गवाह सत्यप्रकाश शाहदा PW-2, नरेश राजोरा PW-3 का अवलोकन किया गया। दौरान वसीयत श्री रामकिशन वल्द गोविन्दलाल स्वस्थचित होना वादी एवं गवाहन ने अपने बयानों में अंकित किया है। दस्तावेज प्रदर्श-4 मृत्यु प्रमाण पत्र एवं जमाबन्दी संवत् 2048-57 खाता सं० 350 वाके ग्राम देहित का अवलोकन करने से प्रतीत होता है कि श्री रामकिशन जी की मृत्यु दिनांक 17.5.90 को हुई एवं संवत् 2048-57 की जमाबन्दी में जर्ज नामान्तरण सं. 808 से रामकिशन जी के पुत्र श्रीनाथ एवं पुत्री ललीता के नाम नामान्तरण दर्ज हुआ। वादी द्वारा अपने वाद पत्र एवं बयानों में यह स्पष्ट अंकित किया है कि रामकिशन जी की वृद्धावस्था से ही वादी रामकिशन जी की कृषि भूमि पर काबिज कास्त था एवं दुकान इत्यादि भी उनके साथ रह कर सम्भालता था। रामकिशन जी द्वारा वसीयत 29.6.1988 को वादी के नाम करवा दी गई एवं वादी के पास रहते हुए ही रामकिशन जी की मृत्यु 17.05.1990 को हुई। उक्त वसीयत एवं स्वयं के बयानों एवं वाद पत्र में अंकित तथ्यों का अवलोकन करने से यह प्रतीत होता है कि यदि वादी द्वारा उक्त भूमि पर काबिज कास्त था, तो वादी द्वारा रामकिशन जी की मृत्यु के पश्चात फोती नामान्तरण दर्ज करने के दौरान राजस्व कार्मिक को वसीयतनामा क्यों पेश नहीं किया गया क्योंकि नामान्तरण दर्ज करने से पूर्व राजस्व कार्मिक द्वारा मजमें आम में वारिसान की जानकारी कर के ही नामान्तरण दर्ज किया जाता है। नामान्तरण दर्ज होने के सम्बन्ध में वादी को जानकारी प्राप्त नहीं हुई तब भी वर्ष 1990 के पश्चात वर्ष 2011 तक वादी द्वारा नामान्तरण को दुरुस्त करवाये जाने हेतु किसी प्रकार का वाद प्रस्तुत नहीं किया गया जबकि वादी को प्रथम दृष्टया फोती नामान्तरण को सक्षम न्यायालय में वसीयत के आधार पर चलेन्ज किया जाना था। किन्तु वादी द्वारा सीधे ही अधिकार घोषणा का वाद 2011 में न्यायालय में दायर किया गया। जो कि प्रतिवादी सं० 2 द्वारा अपने जवाब दावे में अंकित इस कथन की " नामान्तरण वादी की मौजूदगी में व उसके ज्ञान में तस्दीक किया गया है और स्वयं वादी ने ही प्रतिवादी सं० 1 व 2 के पक्ष में खुलवाया है नामान्तरण के समय तक तथाकथित वसीयत अस्तित्व में ही नहीं थी। अन्यथा वादी उक्त वसीयत के आधार पर अपने नाम नामान्तरण अवश्य खुलवाता " को प्रमाणिकता प्रदान करता है। यहाँ यह भी विचारणीय बिन्दु है कि संवत् 2048 से 2057 के मध्य दर्ज नामान्तरण की जानकारी वादी को नहीं हुई हो क्योंकि यदि वादी उक्त भूमि पर काबिज कास्त था तो वह अवश्य ही रूगान पिलाई जमा करवाता होगा तो उसे खातेधारक का नाम याद ना हो। वादी द्वारा वाद पत्र में अंकित तथ्यों एवं दस्तावेज का अवलोकन करने एवं प्रतिवादी सं० 2 का जवाब दावा एवं पेटोकार सरकार का जवाब दावा का अवलोकन करने से वादी यह प्रमाणित करने में सफल नहीं हुआ कि उक्त वाद वर्णित भूमि पर वसीयत के आधार पर नामान्तरण दर्ज नहीं होकर फोती नामान्तरण रामकिशन जी के वारिसान के नाम दर्ज किया गया एवं जानकारी प्राप्त होने के उपरान्त भी फोती नामान्तरण को निरस्त करने हेतु अपील क्यों नहीं की गई। अतः उक्त विवेचन के आधार पर यह तनकी विरुद्ध वादीगण निर्णित की जाती है।

2. आया वादी विवादित आराजी के सम्बन्ध में प्रतिवादीगण को स्थायी निषेधाज्ञा से पाबन्द करवाने का अधिकारी है।

इस तनकी को साबित करने का भार वादी पर था। वादी द्वारा वादपत्र रामकिशन जी की अपने पक्ष में की गई वसीयत के आधार पर पेश किया गया। वादी द्वारा प्रस्तुत वसीयत प्रदर्श पाँच का अवलोकन करने पर वसीयत नोटरी पब्लिक है। जोकि दिनांक 29.06.1988 को की गई थी एवं रामकिशन जी की मृत्यु दिनांक 17.05.1990 को हुई। वादी द्वारा वादपत्र के संबंध में नामान्तरण दर्ज होने बाबत जानकारी के रूप में प्रदर्श 2 नकल जमाबन्दी संवत् 2048-2057 खाता संख्या 350 वाके ग्राम देहित पेश की गई जिसमें रामकिशन वल्द गोविन्दलाल के स्थान पर श्रीनाथ आत्मज रामकिशन व ललीता बाई पुत्री रामकिशन का नाम दर्ज करना जर्ज नामान्तरण 808 से होना प्रतीत होता है। वादी यह सिद्ध करने में कि उक्त नामान्तरण बिना वादी की जानकारी के दर्ज हुआ है, को सफल नहीं

क्योंकि वादी द्वारा अपने वादपत्र में स्पष्ट अंकन किया है कि वादी के दादा रामकिशन जी वसीयत के दौरान मृत्यु के समय वादी के पास थे एवं उनकी वृद्धावस्था में सेवासुआ की व रामकिशन जी के जीवनकाल से ही वादी उनकी संपत्ति यथा मकान, दूकान व कृषि भूमि का उपयोग एवं उपभोग कर रहा था ऐसी स्थिति में वादी द्वारा रामकिशन जी की मृत्यु के पश्चात वसीयत के आधार पर नियमानुसार नामांतरण दर्ज करवाया जाना था किन्तु ऐसा नहीं हुआ एवं तत्समय रामकिशन जी का फोतीनामांतरण उनके वारिसान पुत्र श्रीनाथ एवं पुत्री ललिता बाई के नाम दर्ज किया गया एवं तब से उक्त दोनों ही भूमि के खातेदार दर्ज रिकॉर्ड है। वसीयत प्राप्तकर्ता को जानकारी प्राप्त होने पर नामांतरण के विरुद्ध अपील की जानी थी किन्तु वादी द्वारा नोटेरी वसीयत होने के बावजूद भी ना तो तत्समय नामांतरण के दौरान वसीयत को प्रभावी करने हेतु राजस्व अधिकारियों को अवगत कराया ना ही नामांतरण के विरुद्ध अपील की गई। ऐसी स्थिति में खातेदार कृषक के विरुद्ध केवल वसीयत के आधार पर स्थाई निषेधाज्ञा जारी कर खातेदार कृषक को अपने खातेदारी अधिकारों से वंचित किया जाना औचित्यपूर्ण प्रतीत नहीं होता। अतः उक्त विवेचन के आधार पर यह तनकी विरुद्ध वादीगण निर्णित की जाती है।

3. आया प्रति 0 सं 2 विवादित आराजी का बटवारा करवाकर 1/2 हिस्से की आराजी को स्वयं के नाम खाते दर्ज करवाने का अधिकारी है। प्रतिवादी सं 2

इस तनकी को साबित करने का भार प्रतिवादी पर था। प्रतिवादी संख्या 2 द्वारा प्रस्तुत जवाब दावा एवं काउन्टर क्लेम प्रार्थना पत्र से यह सिद्ध है कि प्रतिवादिनी संख्या 2 विवादित आराजी में बराबर हिस्से की रेकार्डेड खातेदार है जोकि नकल जमाबन्दी खाता संख्या 566 वाके ग्राम देहित सम्वत् 2064-67 प्रदर्श-1 से भी प्रमाणित होता है। नकल जमाबन्दी में प्रतिवादी संख्या 2 रिकॉर्डेड खातेदार होने से व विवादित आराजी में बटवारा करवाकर 1/2 हिस्से की अधिकारी है। अतः उक्त विवेचन के आधार पर यह तनकी प्रतिवादी संख्या 2 के पक्ष में निर्णित की जाती है।

4. अनुतोष- वादी द्वारा वसीयत के आधार पर यह वाद प्रस्तुत किया गया है, लेकिन उक्त वसीयत के आधार पर वादी द्वारा खातेदार कृषक रामकिशन बल्द गोविन्दलाल की मृत्यु के पश्चात वसीयत को प्रभावी करवाते हुए नामांतरण दर्ज करवाया जाना था किन्तु वादी द्वारा उक्त वसीयत को तत्समय में प्रभाव में नहीं लाया गया ना ही दौरान नामांतरण राजस्व कार्मिक को इस बाबत अवगत करवाया गया। जहां तक सवाल है कि वादी को नामांतरण दर्ज होने की जानकारी नहीं थी। यह व्यवहारिक तौर पर प्रमाणित नहीं माना जा सकता, क्योंकि यदि वादी उक्त भूमि पर यदि कृषि कर रहा है तो भूमि संबंधित लगान, पिलाई, भूमि सुधार हेतु ऋण एवं अन्य कार्यों हेतु भूमि के रिकॉर्ड की जानकारी होना सामान्य प्रक्रिया है। वादी द्वारा खातेदार रामकिशन की मृत्यु उपरान्त वसीयत के आधार पर नामांतरण बाद तहसीलदार जांच दर्ज करवाया जाना था परन्तु तत्समय विरासत के आधार पर नामांतरण दर्ज किया गया है। यदि वादी के पक्ष में वसीयत वादी के पास भी है तो यह Logical Conclusion बनता है कि वादी उस वसीयत के आधार पर ही नामांतरण दर्ज करवाता। प्रतिवादी सं 0-2 द्वारा भी अपने जवाब के माध्यम से यह कहा गया है कि नामांतरण वादी द्वारा ही खुलवाया गया था एवं तत्समय वसीयत अस्तित्व में ही नहीं थी। प्रतिवादी सं 0-2 के उक्त कथन का वादी द्वारा कोई रिकॉर्डेड खण्डन नहीं किया गया। वादी द्वारा उक्त नामांतरण की जानकारी होने पर नामांतरण को निरस्त कर वसीयत के आधार पर दर्ज करवाये जाने हेतु अपील भी नहीं की गई। ऐसी स्थिति में वादी इस वसीयत के आधार पर किसी प्रकार का अनुतोष प्राप्त करने के अधिकारी नहीं है।

निर्णय

परिणामस्वरूप वादी द्वारा प्रस्तुत वाद में किया गया दावा पत्रावली पर उपलब्ध तथ्य दस्तावेज एवं रेकार्ड के आधार पर प्रमाणित नहीं होता है अतः वाद वादी स्वारिज किया जाता। तदनुसार डिक्री पर्चा जारी किया जावे। पत्रावली फीसले में शुमार होकर बाद पूर्ति नियमानुसार दाखिल दफ्तर की जावे।

यह निर्णय आज दिनांक 18.03.2024 को मेरे द्वारा टंकित कराया जाकर सरेइजलास सुनाया गया।


(हरबिन्दर डी सिंह)
उपखण्ड अधिकारी
तालेडा

डिक्री व मुकदमें इत्दादाई
(आर्डर 20, रूल 6-7, जाब्ता दीवानी)

अज अदालत न्यायालय उपखण्ड अधिकारी तालेडा जिला बूंदी।
इजलास हरबिन्दर डी सिंह, आर०ए०एस०

जगदीश प्रसाद माहेश्वरी आयु 47 साल आत्मज श्रीनाथ जाति महाजन निवासी ग्राम देहित तहसील बूंदी हाल निवासी म.नं. 5 दशहरा मैदान स्कीम, शक्तिनगर, कोटा (राज.)

.....वादी

बनाम

1. श्रीनाथ आयु 78 साल आत्मज रामकिशन जाति महाजन निवासी ग्राम देहित तहसील बूंदी हाल निवासी दशहरा मैदान स्कीम म.नं. 5 शक्तिनगर, कोटा(राज०)
2. श्रीमति ललिता बाई आयु 65 साल पुत्री श्री रामकिशन जी पत्नि श्री बृजमोहन जी झंवर जाति महाजन निवासी 1 सी 51 महावीर नगर विस्तार योजना सेक्टर -1 कोटा(राज०)
3. राजस्थान राज्य जर्ज तहसीलदार तालेडा जिला बूंदी (राज०)
4. उपपंजीयक, उपपंजीयन कार्यालय तालेडा जिला बूंदी (राज०)

...प्रतिवादीगण

अन्तर्गत धारा 88,89,188 आर.टी.एक्ट
11/दावा/2012

यह मुकदमा आज वास्ते इनफिसाल कतई रुबरु बहहाजरी श्री राजकुमार गीतम एडवोकेट मिनजातिब मुदई ... मिनजातिब मुदायलह पेश होकर, हुक्म दिया जाता है व डिक्री जारी की जाती है कि वादी द्वारा प्रस्तुत वाद पत्रावली पर उपलब्ध तथ्य दस्तावेज एवं रेकार्ड के आधार पर प्रमाणित नहीं होता है अतः वाद वादी स्वारिज किया जाता। स्वर्चा पक्षकारान अपना-अपना वहन करे।

नीज..... मुबलिक..... बाबत..... स्वर्चा इस मुकदमे के मय शूद व शरह..... फीसदी सालाना आज की तारीख से तारीख वसूलयाबी तक को अदा करें।

मुदई	रुपया	पैसे	मुदायलाह	रुपया	पैसे
स्टाम्प अर्जी दावा			स्टाम्प वकालात		
स्टाम्प वकालात			स्टाम्प अर्जी		
स्टाम्प वजह अबूत			महनताना वकील		
महनताना वकील			स्वर्चा गवाहान		
स्वर्चा गवाहान			फीस कमिश्नर		
फीस कमिश्नर			बाबत इजराय		
बाबत इजराय हुक्मनामा			हुक्मनामा		
मुतफरिक			मुतफरिक		
मीजान					

बसब मेरे दस्तखत व मुहर अदालत आज तारीख 18 माह 03 वर्ष 2024 को जारी की गई।

मोहर


(हरबिन्दर डी सिंह)
उपखण्ड अधिकारी
तालेडा